मूसा की कहानी

• यूनुस अगास्कर



हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हकीकत है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुकाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर जोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैगम्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्जत की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफसोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत–पैगम्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

बच्चों की कहानियां–४२

मूसा की कहानी

यूनुस अगास्कर

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

संपादक :
मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :
ठाकोर राणा

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
७, नेताजी सुभाष रोड
बम्बई–४०० ००२

मुद्रक :
अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डॉक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

मूल्य :
दो रुपये

मूसा की कहानी

आज से तीन हजार साल पुरानी बात है।

मिस्र में फिरऔन बादशाह राज करते थे। फिरऔन बादशाहों को मिस्र की जनता सूरज देवता का अवतार मानती और उनकी पूजा करती थी। इस तरह फिरऔनों को बहुत अधिक ताकत मिल गयी थी।

इन फिरऔनों में एक रेमसीस भी था जो बड़ा जालिम था।

उसके समय में मिस्र में यहूदियों की आबादी अधिक हो गयी थी। ये लोग मिस्रियों की तरह फिरऔनों को सूरज का अवतार नहीं मानते थे। इसलिए फिरऔन और उसकी जनता यहूदियों को पसन्द नहीं करती थी। यहूदियों की बस्तियां नगर से दूर होती थीं। मिस्रियों ने उन्हें दास बना रखा था और उनसे तरह-तरह के कठिन काम लेते थे।



मिस्र के पिरामिड, जो हजारों वर्षों से खड़े आकाश से बातें कर रहे हैं, उन्हीं दासों की मेहनत और तकलीफ से बने हैं।

कहा जाता है कि रेमसीस को उसके राज-दरबार के ज्योतिषियों ने बताया था कि उन यहूदियों में एक ऐसा बच्चा पैदा होगा जो फिरऔनों के राज्य और वंश का नाश कर देगा। बस फिर क्या था, उसने हुक्म दे दिया कि यहूदी बस्ती में पैदा होनेवाले लड़कों को जान से मार दिया जाये। केवल लड़कियों को छोड़ने का आदेश था। इस हुक्म ने यहूदियों में खलबली मचा दी और वे डर के मारे अपने बच्चों को फिरऔन के सिपाहियों से छिपाने लगे।

उन्हीं दिनों एक यहूदी इमरान के घर एक बच्चे का जन्म हुआ।

उसके मां-बाप ने उसके जन्म की खबर सबसे छिपाकर रखी। चुपके-चुपके वह लड़का तीन महीने का हो गया। अब उसके जन्म को छिपाना कठिन हो गया, और बच्चे के साथ बड़ों को भी अपनी जान का खतरा पैदा हो गया।

उस बच्चे की मां ने एक उपाय सोचा। उसने ताबूत की तरह लकड़ी की एक पेटी बनवायी। उस पर राल और रोगन की पालिश की ताकि पानी का असर न हो। फिर बालक को कपड़ों में लपेटकर उस पेटी में लिटा दिया। अपनी बड़ी बेटी मरियम को साथ लेकर वह मिस्र की मशहूर नील नदी के किनारे आयी और उस पेटी को नदी के बहाव में छोड़ दिया।

अपने बच्चे को खुदा के हवाले कर



"मां ने पेटी को नदी के बहाव में छोड़ दिया।"

उसने मरियम से कहा, " देख बेटी, यह पेटी नदी के बहाव पर जा रही है। तू इस पर नजर रख और यह कहां गयी, बच्चे को किसने लिया, इसकी मुझे खबर दे।" और रोती हुई वह घर लौट गयी।

पेटी बहती-बहती राजमहल से जा लगी।

नील नदी के बहाव का कुछ भाग फिरऔन के राजमहल के बड़े-से हौज में मिलाया गया था। इस हौज में और उसके आसपास हमामों में राजघराने के लोग नहाया करते थे।

पेटी नदी के पानी के साथ हौज के अन्दर चली गयी। वहां फिरऔन की बेटी नहा रही थी। उसने दासियों से कहकर वह पेटी मंगवाई और देखा तो एक गुलाबी-गुलाबी गालोंवाला, भोला-भाला बच्चा अंगूठा चूस रहा है।

" हाय, कितना सुन्दर है ! कैसा प्यारा लग रहा है ! ! लगता है किसी यहूदी का बच्चा है," फिरऔन की बेटी के मुंह से निकला।

वह उसे अन्दर ले गयी।

रेमसीस की पत्नी आसिया ने जब उस बच्चे को देखा तो कहा, " मैं इसे पालूंगी।"

अब सवाल यह था कि इस बच्चे को दूध कौन पिलाये ?

शाही दासी को बुलाया गया, लेकिन बच्चे ने किसी का दूध नहीं पिया।

मरियम छुप-छुपकर, महल में आने-जानेवाली औरतों से बच्चे का हाल मालूम करने में लगी हुई थी। उसे जब पता चला कि उसका छोटा भाई किसी औरत का दूध नहीं पी रहा है तो उसने अन्दर खबर भिजवायी कि वह एक अच्छी दाई को जानती है। अगर महलवालों का हुक्म हो तो वह उसे बुला लाये। फिरऔन की पत्नी तुरन्त राजी हो गयी।

मरियम अपनी मां को बुला लायी।

बच्चे ने तुरंत अपनी मां का दूध पीना शुरू कर दिया। फिरऔन की पत्नी ने उसे बच्चे की दाई बनाया। जब रेमसीस को पता चला कि एक यहूदी बच्चा उसके अपने ही महल में पलने लगा है तो वह बहुत गुस्सा हुआ। वह



चाहता था कि उस बच्चे को जान से मार दे लेकिन उसकी पत्नी और बेटी ने समझा-बुझाकर उसे इस हत्या से रोका।

इस बच्चे का नाम रखा गया मूसा। इसका अर्थ होता है बाहर निकाला हुआ। मूसा को फिरऔन की पत्नी ने पानी से बाहर निकाला था, इसलिए उनका यही नाम पड़ गया।

आगे चलकर यही मूसा यहूदियों के पैगंबर और मार्गदर्शक बने।

बचपन में मूसा अपने दुश्मन फिरऔन के महल में, अपनी मां की देख-रेख में पले-बढ़े। जब वे जवान हुए तो एक ताकतवर और सुंदर आदमी बने। हां, उन्हें गुस्सा बहुत जल्दी आ जाता था। अपनी कौम पर होनेवाले जुल्म और अत्याचार को देखकर तो उनका खून खौलने लगता था। वे अकसर नगर के बाहर अपने लोगों की बस्ती में जाकर उनकी पूछताछ किया करते थे।

एक बार उन्होंने देखा कि नगर के पास ही एक कारीगर एक यहूदी दास को पीट रहा है। उन्होंने उसे समझाना चाहा, लेकिन वह नहीं माना और मूसा को यहूदी कहकर उनकी खिल्ली उड़ाने लगा। मूसा कुछ देर तो अपने गुस्से पर काबू करते रहे फिर अचानक बिफरकर उन्होंने उस मिस्री को एक घूंसा

लगाया। घूंसा मिस्त्री को ऐसी जगह लगा कि वह जान से हाथ धो बैठा।

खबर फौरन फिरऔन तक पहुंची।

मूसा ने डर से नगर छोड़ दिया और रेगिस्तान की ओर चल पड़े।

चलते-चलते वे मदेन पहुंचे। वहां यहूदियों की एक छोटी-सी बस्ती थी। मूसा ने देखा कि एक कुएं पर लोग अपने पशुओं को बाल्टी से खींच-खींचकर पानी पिला रहे हैं। थोड़ी दूर पर दो लड़कियां खड़ी हैं और वे अपने पशुओं को पानी पीने से रोक रही हैं।

मूसा ने उनसे पूछा, "तुम दोनों पानी क्यों नहीं लेती हो?"

लड़कियों ने जवाब दिया, "सारे आदमी हमें धक्के मार-मारकर अलग कर देते हैं, डोल छीन लेते हैं। इसलिए हम भीड़ में नहीं घुसते। जब सब पानी पिला चुकते हैं तो हम बचा-बचाया पानी अपने पशुओं को पिलाते हैं। हमारे बाप बहुत बूढ़े हो चुके हैं। वे यह काम नहीं कर सकते, इसलिए हमें ही पशु चराना और उन्हें पानी पिलाना पड़ता है।"

यह सुनकर मूसा चुप न बैठ सके। उन्होंने आगे बढ़कर बाल्टी ली और पानी खींचकर उन लड़कियों के पशुओं को पिलाया।

उनकी ताकत, जवानी और चेहरे के तेज को देखकर कोई कुछ नहीं बोला। दोनों लड़कियों ने मन से उन्हें धन्यवाद दिया और पशुओं को लेकर घर चली गयीं।

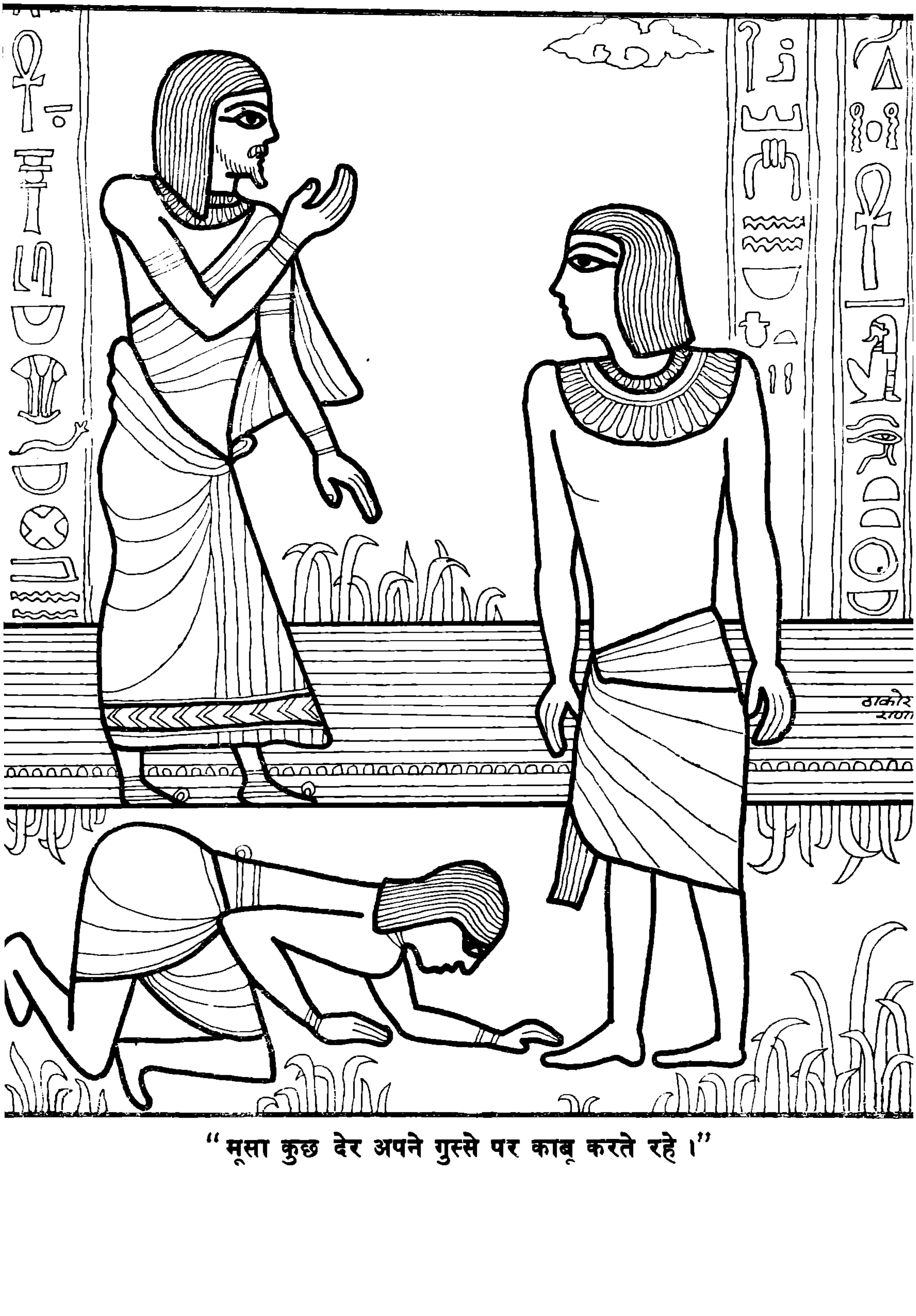
दोनों लड़कियों को आज जल्दी ही घर पहुंचा देखकर उनके बूढ़े पिता को बड़ा अचम्भा हुआ। उन्होंने जल्दी लौट आने का कारण पूछा। लड़कियों ने सारी घटना कह सुनायी।

पिता ने कहा, "तुमने उस अजनबी नौजवान को घर क्यों नहीं बुलाया? बेचारा थका-हारा था। उसने तुम दोनों की मदद की। उसकी कृपा का कुछ तो बदला चुकाना चाहिए। जाओ सफोरा, तुम उसे अपने घर बुला लाओ।"

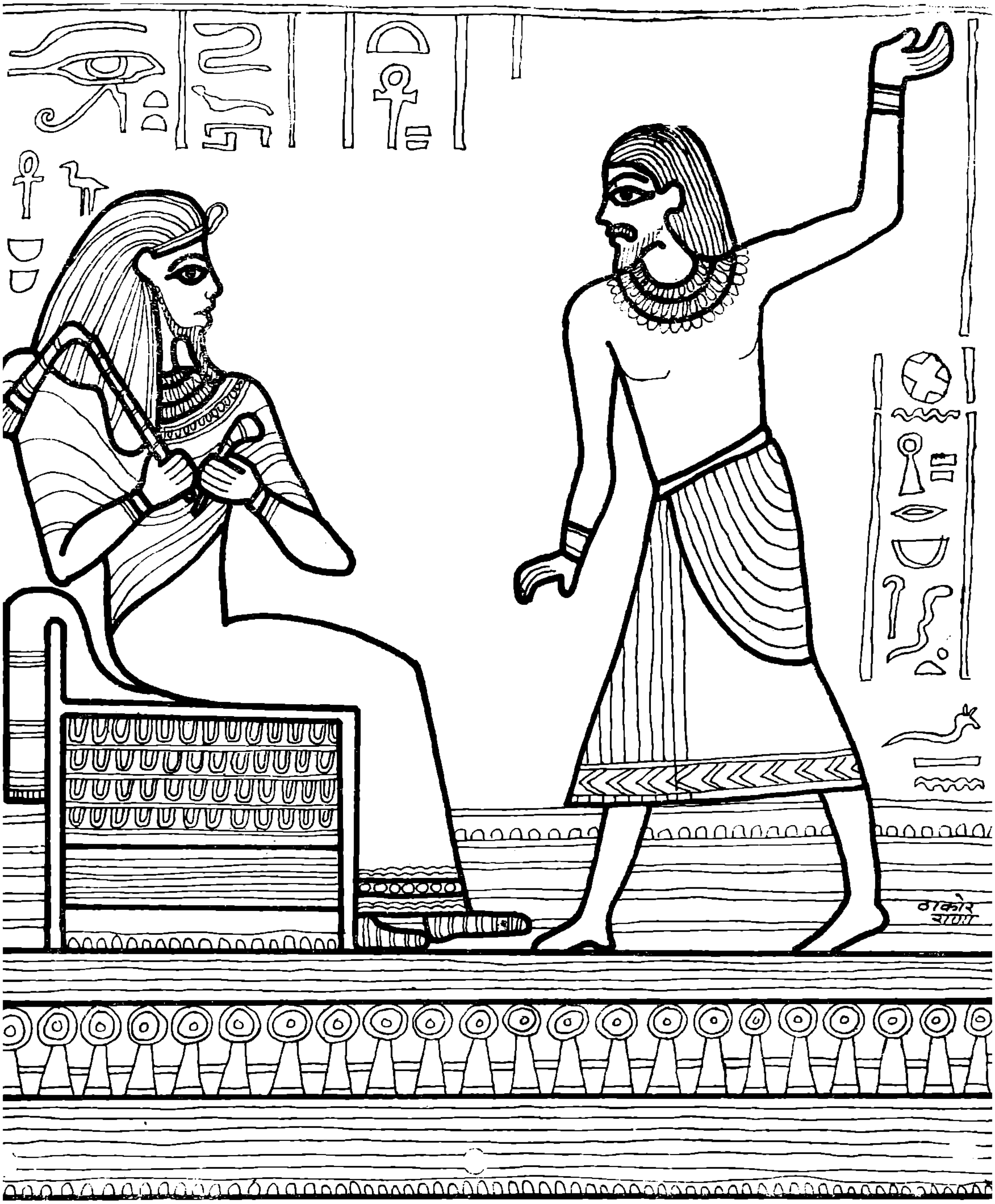
सफोरा झिझकती-सकुचाती कुएं पर आयी।

मूसा एक पेड़ की छाया में आराम कर रहे थे।

उसने पास जाकर कहा, "हमारे घर चलिए। हमारे पिता आपसे मिलना चाहते हैं।"



"मूसा कुछ देर अपने गुस्से पर काबू करते रहे ।"



"मेरी जाति के लोगों को आजाद कर दो।"

समझकर उससे डरती थी, और उसकी पूजा करती थी। मूसा तो ऐसे ईश्वर का नाम लेते थे जिसका न कोई साथी था और न कोई अवतार, और जो डरने से अधिक प्रेम करने लायक था।

अपना महत्व और अपनी धार्मिक सत्ता को खतरे में देखकर फिरऔन ने यहूदियों पर और भी अत्याचार करने का हुक्म दिया। उसने अपने दरबार के जादूगरों को बुलाया ताकि वे मूसा का मुकाबला कर उन्हें हरा दें।

फिरऔन के जादूगरों ने अपनी रस्सियां और लाठियां जमीन पर डाल दीं तो वे सांप बनकर दौड़ने लगीं। मूसा ने खुदा का नाम लेकर अपनी लाठी जमीन पर डाली तो वह अजगर बनकर सबको निगल गयी। फिरऔन के जादूगर यह देखकर मूसा के धर्म में शामिल हो गये।

फिरऔन गुस्से से पागल हो गया। उसने अपने बाप की तरह यहूदियों के बेटों को जान से मार डालने और बेटियों को दासियां बनाने का आदेश दे दिया। यह देखकर मूसा ने ऐसा शाप दिया जिसके कारण मिस्र पर तरह-तरह की मुसीबतें आने लगीं। नील नदी में खून बहने लगा, मछलियां मर गयीं, मेढ़कों में बीमारी फैली, कीड़े-मकोड़े और मक्खियां काली आंधी की तरह उठने लगीं, लोगों को जान के लाले पड़ गये, लेकिन फिरऔन अपने बुरे रास्ते पर चलता ही रहा। इधर मूसा की जातिवालों ने फिरऔन के अत्याचारों से घबराकर मूसा को दोष देना शुरू कर दिया कि तुमने हमें और अधिक मुसीबतों में फंसा दिया। लेकिन मूसा जानते थे कि कष्ट उठाये बिना गुलामी से छुटकारा मिलना कठिन है। उन्होंने अपने लोगों को समझा-बुझाकर शांत किया।

मूसा ने अंतिम बार फिरऔन से मिलकर उसे समझाने की कोशिश की, "मेरी जाति के लोगों को आजाद कर दो। तुम्हारे देश पर आयी यह सारी मुसीबत दूर हो जायेगी।"

फिरऔन ने चिल्लाकर कहा, "नहीं, नहीं, नहीं। अगर तुमने मुझसे मिलने की दुबारा कोशिश की तो तुम्हें जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

मूसा उठकर चले आये। उस रात मिस्र पर मौत ने जैसे धावा बोल दिया।

हर घर की पहली संतान मौत की भेंट चढ़ गयी। यहां तक कि फिरऔन का उत्तराधिकारी भी मौत के मुंह में पहुंच गया। उसी रात यहूदियों ने चुपके से अपनी बस्ती छोड़ दी और रेगिस्तान की ओर चल पड़े।

जब दूसरे दिन का सूरज निकला तो गुलामों की बस्ती खाली पड़ी थी।

फिरऔन को जब पता चला कि यहूदी सही-सलामत निकल चुके हैं तो उसने अपनी सेना को उनका पीछा करने का हुक्म दिया और खुद भी सेना के साथ चल पड़ा।

मूसा अपने काफिले के आगे-आगे चल रहे थे। उनके काफिले में बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री-पुरुष सभी थे। उनके साथ उनकी गृहस्थी का पूरा सामान था। सबके चेहरों पर आजादी की खुशी थी और दिलों में फिरऔन का डर। मूसा सबकी हिम्मत बढ़ा रहे थे।

चलते-चलते वे लोग लाल सागर के किनारे पहुंच गये। उनके पास नावें तो नहीं थीं, लड़ने के लिए हथियार भी नहीं थे। आगे ऊंची लहरों से भरा समुद्र था और पीछे से फिरऔन की सेना बढ़ती चली आ रही थी। वे डरने लगे। मूसा ने सबको शांत किया, प्रार्थना करने के लिए कहा और खुद भी खुदा से दुआ मांगने लगे।

धीरे-धीरे हवा तेज हो गयी और समुद्र के बीच से रास्ता बन गया। मूसा ने लाठी से संकेत किया और अन्दर पांव बढ़ाया। मूसा के पीछे-पीछे यहूदियों का पूरा काफिला लाल सागर में उतरकर पार चला गया।

जिस समय मूसा का काफिला समुद्र पार कर रहा था, फिरऔन की सेना समुद्र के किनारे आ पहुंची थी। फिरऔन सबसे आगे था। उसने समुद्र में निकला मार्ग देखा तो बिना सोचे-समझे उसमें उतर पड़ा। पीछे से उसकी सेना भी आयी। जब वे बीच समुद्र में पहुंचे, उस समय मूसा का काफिला पार उतर चुका था। मूसा के काफिले के पार होते ही अचानक समुद्र का पानी एक हो गया। रास्ता बन्द हो गया। फिरऔन की सेना लाल सागर में डूब मरी। इस तरह सच



“पूरा काफिला लाल सागर में उतरकर पार चला गया।”

की जीत हुई और जालिम फिरऔन की हार। अत्याचार का बीज कभी नहीं फलता है।

इसके बाद मूसा और उनकी जाति चालीस साल तक जंगलों और रेगिस्तानों में भटकती रही। मिस्र की गुलामी ने उनके इरादों को कमजोर कर दिया था। इसलिए इधर-उधर भटकने से वे अप्रसन्न रहने लगे और मूसा से कहने लगे, "क्या मिस्र में मरने के लिए जगह नहीं थी जो तुम हमें यहां ले आये ?"

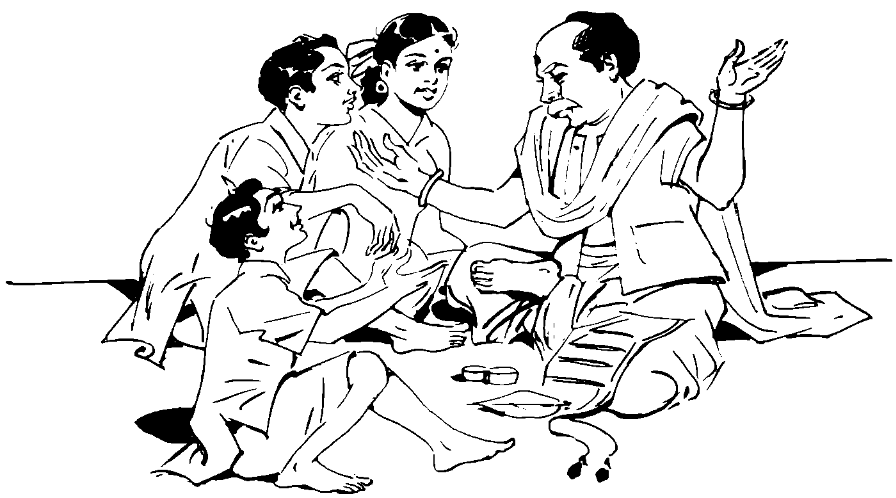
मूसा ने अपनी जाति को खुदा पर भरोसा करना सिखाया, उन्हें हिम्मत दिलायी और उनके अन्दर एक बलवान राष्ट्र बनने की ताकत पैदा की। धीरे-धीरे वे आजादी की कीमत समझने लगे और हर प्रकार का कष्ट सहने को तैयार हो गये।

चलते-चलते उनका काफिला सीना पहाड़ की घाटी में आकर ठहरा। वहां की धरती बड़ी उपजाऊ थी। उन्होंने खेती-बाड़ी कर, बाग लगाकर उसे और भी हरा-भरा और सुन्दर बना दिया। अब वे मिल-जुलकर रहना, अपनी रक्षा करना और शत्रु का सामना करना सीख गये। मूसा की मौत के बाद उन्होंने कनआन की वादी में रहना शुरू किया जो सीना से अधिक उपजाऊ थी।

मूसा की शिक्षा को यहूदियों ने धार्मिक-ग्रंथ के रूप में एकत्र किया है, जिसे तोरात कहा जाता है। मूसा ने सबको एक ईश्वर, एक धर्म, एक ग्रंथ और एक कौम मानने का पाठ पढ़ाया। उनमें एकता पैदा करके यहूदियों को एक शक्तिशाली जाति के रूप में संगठित किया। हमेशा नेक रास्ते पर चलाने के लिए कानून बनाये। ऐसे कानूनों में चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, किसी की हत्या न करना, अपने मां-बाप का आदर करना आदि भी शामिल है। ●

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी !

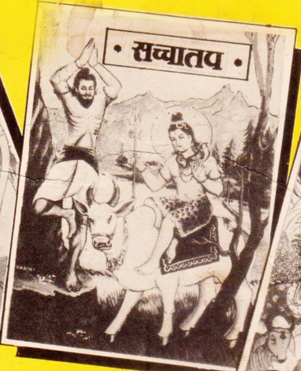
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पांचवीं किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।



हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा









बच्चों की कहानियां



हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०००२









